श्रीचक्र ज्ञानेश्वर

३०

सच्ची दिव्यता

देवताओं और ब्रह्मांडीय ऊर्जा के चमत्कारी रहस्य,
देवता के रूप में ब्रह्मांडीय ऊर्जा के बारे में मनुष्यों की आस्थाएँ,
मानव आत्माओं और देवात्माओं की विभिन्न स्थिति के अद्भुत रहस्य

- इससे पूर्व कभी वैज्ञानिक रूप से नहीं कहा गया -

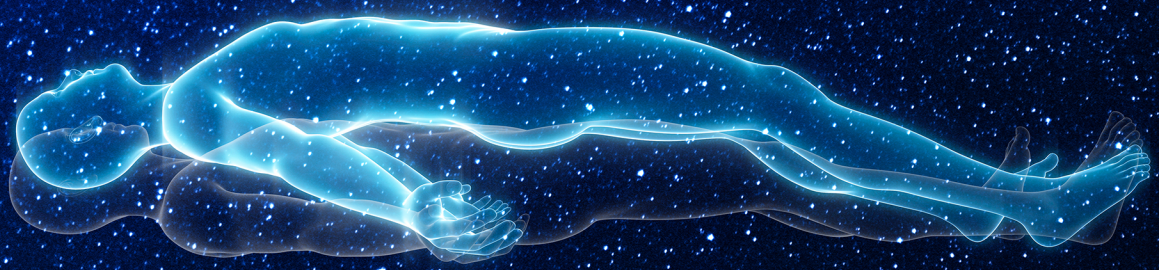

खंड - I

श्रीचक्र ज्ञानेश्वर

सच्ची दिव्यता

देवताओं और ब्रह्मांडीय ऊर्जा के अद्भुत रहस्य,

ईश्वर के रूप में ब्रह्मांडीय ऊर्जा के बारे में मानव विश्वास,

मानव आत्माओं और देवताओं के पदानुक्रम की विभिन्न स्थितियां

– वैज्ञानिक तरीके से पहली बार बताया गया –

वॉल्यूम – I

Copyright © 2022 by Srichakra Gnaneswar

India copyright - Registration number: L- 99949/2021 dated 01/03/2021
Revised content is registered in Diary number: 20921/2022-CO/L dated 06/10/2022
USA copyright - Registration number: TXu 2-213-848 dt: July 15, 2020 & 1st Revision:
1-12020609321 dt: 6/16/2021, 2nd Revision: 1-12020488571 dt: 12/12/2022 UK copyright - Registration number: 284735642 dt: 16/07/2020 & updated 10/12/2022

All rights reserved. No part of this book may be used or reproduced by any means, graphic, electronic, or mechanical, including photocopying, recording, taping or by any information storage retrieval system without the written permission of the author except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. The True Divinity collection of books may be ordered through booksellers or by contacting:

ONLINE POINT PRIVATE LIMITED,
33, Ramanujam Street, T. Nagar, Chennai-600017, Tamil Nadu, India,
www.thetruedivinity.com, Email: thetruedivinity@gmail.com, Ph: +91- 7418248999

Disclaimer: Because of the dynamic nature of the Internet, any web addresses or links contained in this book may have changed since publication and may no longer be valid. The views expressed in this work are solely those of the author and do not necessarily reflect the views of the publisher, and the publisher hereby disclaims any responsibility for them. The contents of this book are entirely based on the personal experiences and knowledge of the author about various gods, cosmic energy, their powers and characteristics, etc., and derived from the author's insight that he gained by following his inner consciousness and through the guidance from various ancient gods by performing Fire rituals. The principles prescribed herein are not intended to criticize or demotivate any caste, creed, faith, cult, race, belief, customs, rites, and ritual practices. They are not against any spiritual leaders of any persuasion whatsoever. It is up to the individuals' discretion to accept or ignore the concepts explained in this book. The author and publisher assume no responsibility if anyone may feel harmed, hurt, intimidated, or insulted in any manner whatsoever by the contents of this book. This book aims to help humanity upgrade their worship methods to obtain efficient blessings from cosmic energy and the gods in life and the afterlife. Any people depicted in stock imagery provided by Getty Images are models, and such images are being used for illustrative purposes only. Certain stock imagery © Getty Images.

ISBN: 978-93-xxxxx-xx-x (Hardcover)
ISBN: 978-93-xxxxx-xx-x (Paperback)
ISBN: 978-93-xxxxx-xx-x (eBook)

First Edition: 2023

वॉल्यूम – I

(1) ईश्वर कौन है? - ब्रह्मांडीय ऊर्जा या शाश्वत मानव आत्माएं

(2) ईश्वर के रूप में ब्रह्मांडीय ऊर्जा के बारे में मनुष्यों का विश्वास

(3) देवता और उनकी ब्रह्मांडीय शक्तियाँ

(4) ब्रह्मांडीय ऊर्जा कण की शक्तियाँ - कंपन और प्रतिबिंब

(5) ब्रह्मांडीय स्पंदनों द्वारा त्रिमूर्ति और अन्य देवताओं के नाम.

(6) मानव आत्माओं की विभिन्न स्थिति और ईश्वरीय आत्माओं का पदानुक्रम

वॉल्यूम – II

(7) मानवता के लिए अनेक देवताओं का महत्व

(8) मंदिर और उनकी ब्रह्मांडीय ऊर्जा सुविधाएं देवताओं के लिए हैं

(9) मूर्ति पूजा में ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रतिबिंब

(10) प्राचीन ब्रह्मांडीय देवताओं की पूजा में ब्रह्मांडीय ऊर्जा के प्रतिबिंब और कंपन

(11) आधी पराशक्ति (सर्वोच्च माता) देवी की पूजा

(12) देवी आत्माओं की पूजा (दशा महा विद्या और सक्तम)

(13) सुरक्षात्मक देवता, ग्राम देवता, वंश देवता (कुला देवता) और पैतृक पूजा

(14) नौ ग्रह और उनकी ब्रह्मांडीय ऊर्जा पूजा (सौरम)

(15) ईश्वरीय आत्माओं को सक्रिय करने के लिए अग्नि पूजा (अग्नि अनुष्ठान)

वॉल्यूम – III

(16) दैवीय पशुओं, प्रतीकों और गृह पूजा कक्ष पर ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रभाव

(17) भक्तों को आशीर्वाद देने में भगवान की लौकिक शक्तियां

(18) देवताओं और मंदिरों के साथ क्या करें और क्या न करें

(19) मंदिरों में अनुचित अनुष्ठान और भूले हुए रक्त बलिदान

(20) क्या सभी पूजा स्थलों में देवता निवास कर सकते हैं?

(21) देवत्व और अध्यात्म में अंतर

(22) 'मैं कौन हूँ' और 'मोक्ष' के लिए मानव की खोज - सत्य

(23) मानव मस्तिष्क और उसकी ब्रह्मांडीय शक्तियां

(24) मनुष्य की आत्मा और उसकी विभिन्न अवस्थाओं का निर्माण

(25) मृत्यु अनुष्ठान और उनकी ऊर्जा का मनुष्य की आत्मा पर प्रभाव

वॉल्यूम – IV

(26) देवत्व से संबंधित भ्रामक मान्यताएं

(27) देवताओं के अलावा अन्य पूजा पर ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रभाव

(28) सच्चा ज्ञानोदय और मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य

(29) कर्म, श्राप और भाग्य कैसे काम करते हैं?

(30) गुप्त विज्ञान पर ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रभाव - तांत्रिक और ज्योतिष

(31) इमारतों में ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रभाव - वास्तु

(32) नेमोलॉजी, न्यूमरोलॉजी और जेमोलॉजी

(33) मंदिर की आवश्यकताएं और मंदिर में अपनी आत्मा को कैसे समायोजित करे

निष्कर्ष

प्राक्कथन

मनुष्यों ने ही "भगवान" शब्द की रचना की है। ब्रह्माण्डीय शक्तियों ने इसे ईश्वर के नाम से पुकारने के लिए नहीं कहा । हम किसी भी व्यक्ति या किसी भी चीज़ की पूजा कर सकते हैं या भगवान कहकर पुकार सकते हैं । कुछ लोग विभिन्न शाश्वत मानव आत्माओं को देवताओं के रूप में पूजते हैं, और अन्य लोग प्रकृति में विद्यमान ब्रह्मांडीय ऊर्जा कणों (ग्रहों के विकिरण या पृथ्वी के ऊर्जा के पांच तत्वों, जैसे कि वायु, अग्नि, जल, आदि) के विभिन्न रूपों को देवताओं के रूप में पूजते हैं । इन सभी देवताओं की अपनी शक्तियों पर प्रतिबंध होता है । इन पुस्तक में व्याख्या की गयी है कि हमारे मानव जीवन और आत्माओं के शाश्वत जीवन में हमारे चारों ओर शाश्वत मानव आत्माओं और ब्रह्मांडीय ऊर्जा कणों के ऊर्जा समर्थन का प्रभावशाली ढंग से उपयोग कैसे किया जाए ।

ईश्वर के रूप में शाश्वत मानव आत्माओं की पूजा:

हजारों कर्मचारियों वाले एक प्रमुख उद्योगपति और कुछ सेवादारों वाले एक छोटे प्रतिष्ठान के मालिक को उनके कर्मचारी बॉस कह सकते हैं। इन दोनों मालिकों की स्थिति का आकलन उनके ज्ञान, क्षमता, उनके अधीन कर्मचारी, धन की स्थिति आदि के आधार पर किया जाता है । इसी प्रकार से, ईश्वरीय आत्माओं (अर्थात्, शाश्वत मानव आत्माओं) की दिव्य स्थिति भी भिन्न होती है । लोग अपने ब्रह्मांडीय ऊर्जा-प्रबंधन कौशल और अपने दिव्य अनुचर के आधार पर विभिन्न दिव्य नामों/उपाधियों के अंतर्गत, विभिन्न देवताओं की पूजा करते हैं । पुनर्जन्म के पश्चात जीवित रहने के लिए, एक मानव आत्मा को किसी भी देवता के समर्थन की आवश्यकता होती है (अर्थात, मंदिरों में निवास करने वाली शाश्वत मानव आत्माओं), जैसा कि नीचे उल्लेखित किया गया है ।

1. प्राचीनकाल के शाश्वत मानव आत्माओं को त्रिदेव (भगवान शिव, भगवान महाविष्णु, भगवान ब्रह्मा) कहा जाता है । उनके अधीन एक विशाल दिव्य अनुचर विद्यमान होता है, जिनमें से कई मानव आत्माओं को उनके परिवार के प्रमुख देवताओं के रूप में प्रचारित किया जाता है, जैसे कि ईश्वर देवता, भगवान गणपति, भगवान मुरुगर, भगवान राम, भगवान कृष्ण, आदि ।

2. प्रमुख मंदिरों जैसे कालभैरव, चंडिकेश्वर, आदि में विभिन्न दिव्य उपाधियों के साथ परिवार देवताओं के रूप में शाश्वत मानव आत्माओं की पूजा की जाती है ।

3. शाश्वत स्त्री आत्माओं को अम्मान, देवी, अंबल, माता, आदि की दिव्य उपाधियों और आदि पराशक्ति के रूप में एक सर्वोच्च देवी की पूजा की जाती है।

4. करुप्पार, मुनिश्वरर, हनुमान आदि दिव्य उपाधियों वाले शाश्वत मानव आत्माओं को सुरक्षा प्रदान करने वाले देवताओं के रूप में पूजा जाता है ।

5. गाँव के मंदिरों में स्थापित कुल देवताओं के रूप में पूर्वजों की शाश्वत आत्माओं को पूजा जाता है ।

प्रकृति के ब्रह्मांडीय ऊर्जा की ईश्वर के रूप में पूजा:

1. ब्रह्मांडीय ऊर्जा कणों के विभिन्न रूपों, जैसे कि वायु में स्वतंत्र रूप से विचरण करने वाले परमाणु और ग्रह की ऊर्जा विकिरणों को भगवान/देव के रूप में पूजा जाता है, जैसा कि नीचे उल्लेखित है । वे शाश्वत मानव आत्माएँ नहीं हैं । लोग ब्रह्मांड और इसके व्यापक रूप से फैले ब्रह्मांडीय ऊर्जा कणों की विभिन्न नामों से पूजा करते हैं, जैसे कि सर्वशक्तिमान ईश्वर, प्रपंचशक्ति, ब्राह्मण, आदि ।

2. पृथ्वी के पांच तत्वों की ब्रह्मांडीय ऊर्जा (भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश) की ना, मा, सी, वा, या पंचभूतम के रूप में पूजा करना ।

3. कुबेर देव, वरुण देव, इंद्र देव, निरुधि देव, आदि जैसे दिशात्मक देवताओं के रूप में पृथ्वी के चारों ओर आठ दिशाओं से आने वाली ब्रह्मांडीय ऊर्जा की पूजा करना । सौर मंडल और इसके नौ ग्रहों की ऊर्जा विकिरणों, जैसे सूर्य देव, चंद्र देव, बुद्ध देव, शुक्र देव, शनि देव, आदि और 27 सितारों की पूजा करना ।

4. प्रकाश/अग्नि ऊर्जा (तेल के दीपक) को देवता के रूप में, ब्रह्मांडीय ऊर्जा के कंपनों (मंत्र) को देवता के रूप में, धातु की प्लेट (यंत्र) में ब्रह्मांडीय ऊर्जा के प्रवाह आरेखनों को देवता, दिव्य प्रतीकों को देवता के रूप में पूजा करना ।

पूजा करते समय ब्रह्मांडीय ऊर्जा के प्रतिबिंब निम्नलिखित हैं:

हमारे आसपास के वातावरण में विद्यमान ब्रह्मांडीय ऊर्जा कणों (अर्थात्, परमाणु कणों) में प्रतिबिंब की विशेषताएँ, स्मृति और अन्य शक्तियाँ निहित होती हैं । जब हम निम्नलिखित की पूजा करते हैं, तो उनके चारों ओर की ब्रह्मांडीय ऊर्जा संबंधित वस्तुओं या पूजा करने वाले व्यक्तित्व के मानव जीवन की विशेषताओं को दर्शाती है ।

1. संत-सुलभ आत्माओं, आदरणीय व्यक्तियों, आध्यात्मिक नेताओं आदि की पूजा करते समय, ब्रह्मांडीय ऊर्जा उनके मानव जीवन की विशेषताओं, जैसे प्रेम, दया, शांति और अन्य कौशल को उपासकों पर प्रतिबिंबित करती है ।

2. किसी भी स्थान पर मुक्त विचरण करने वाले ब्रह्मांडीय ऊर्जा कणों की पूजा करते समय, वे उपासकों के वर्तमान गुणों और ऊर्जा संवर्धन जैसे कौशल में वृद्धि करते हैं ।

3. पूर्वजों की आत्माओं की पूजा करते समय, ब्रह्मांडीय ऊर्जा उन पूर्वजों के मानव जीवन कौशलों और चरित्रों को उनके स्मृति की विशेषताओं के माध्यम से दर्शाती है।

4. घर के पूजा कक्ष में विभिन्न देवताओं की मूर्तियों और चित्रों की पूजा करते समय, ब्रह्मांडीय ऊर्जा संबंधित देवताओं के ब्रह्मांडीय कौशलों को दर्शाती है ।

5. देवताओं के दिव्य वाहन के रूप में देवताओं के चित्रों के साथ चित्रित विभिन्न पशुओं और पक्षियों की पूजा करते समय, ब्रह्मांडीय ऊर्जा उपासकों के मस्तिष्क कक्षों में जीवन के ऐसे स्वरूपों के कौशल को दर्शाती है और समान कौशल को प्रोत्साहित करती है ।

ब्रह्मांडीय ऊर्जा के प्रतिबिंब, स्मृति और अन्य कौशल:

ब्रह्मांडीय ऊर्जा बिना पूजा किए भी हमारे जीवन को निम्नानुसार प्रभावित करती है:

1. ब्रह्मांडीय ऊर्जा की स्मृति आनुवांशिक गुणसूत्रों (जीन्स), माता-पिता के विचारों आदि से होकर गुजरती है ।

2. ब्रह्मांडीय ऊर्जा दैनिक जीवन में हमारे द्वारा प्रयुक्त विभिन्न रंगों से प्रतिविम्बित होती है ।

3. अपनी विशेषताओं के अनुसार, हमारे वातावरण में विद्यमान विभिन्न छायाचित्रों, प्रतिकृतियों, वस्तुओं, प्रतीकों और मूर्तियों से ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्रतिविम्बित होती है ।

4. मानव द्वारा प्रदत्त नामों जिन्हें नामशास्त्र और अंकशास्त्र कहा जाता है, में ब्रह्मांडीय ऊर्जा का कम्पन होता है ।

5. ग्रह की ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रभाव ज्योतिष विज्ञान और प्राकृतिक पत्थरों (रत्न विज्ञान) पर पड़ता है ।

6. घर में और समरूपी मानव मनोदशा में होने वाले उतार-चढ़ावों (वास्तु) में ब्रह्मांडीय ऊर्जा और विद्युत चुम्बकीय तरंगों का प्रवाह होता है ।

7. श्राप, तांत्रिक और अनिष्टकारी शक्तियों जैसी ब्रह्मांडीय ऊर्जा की विनाशकारी शक्तियाँ ।

हम जीवन में आने वाली कठिनाइयों से परिचित हैं । जो मनुष्य मोक्ष (शाश्वत जीवन) का लक्ष्य रखते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि उनकी आत्माओं को आकाश में स्थित स्वर्ग जैसा स्थान नहीं मिलता । मानव आत्माओं को पृथ्वी पर सुरक्षित रूप से निवास करने के लिए एक स्थान और उनकी आत्माओं को पोषण देने के लिए निरंतर ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जो निकटवर्ती मंदिरों और ऊर्जावान अनुष्ठानों में विद्यमान रहने वाली शाश्वत मानव आत्माओं के समर्थन से ही संभव है । हम उनसे एक अक्षुण्ण आत्मा के रूप में विद्यमान रहने और मृत्यु के उपरांत दिव्य आत्मा की प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्रबंधन का कौशल सीख सकते हैं ।

सौर मंडल और नौ ग्रहों को भगवान के रूप में पूजा जाता है

प्रस्तावना

सभी के लिए दिन शुभ हो! जो लोग पूजा करते हैं, वे मृत्युपरांत अपने देवताओं के पास जाने की अपेक्षा करते हैं । कोई भी स्पष्ट रूप से यह नहीं जानता कि ऐसा मृत्युपरांत जीवन हमारी एक आस्था मात्र है या प्राकृतिक । यह पुस्तक उन मृत्युपरांत रहस्यों को वैज्ञानिक दृष्टि से स्पष्ट करता है । मनुष्य और मानव जीवन हमारे भौतिक शरीर के साथ वास्तविक है । इसी प्रकार से, मृत्युपरांत जीवन और उससे संबंधित संघर्ष हमारी आत्मा की ऊर्जा के रूप में वास्तविक है । अधिकांश मनुष्यों की आत्मिक ऊर्जा हवा में बिखर जाती है । कुछ मनुष्य अपनी आत्मिक ऊर्जा को अक्षुण्ण रूप में रोक सकते हैं और अपना शाश्वत जीवन जी सकते हैं । पहले से विद्यमान अमर मानव आत्माओं की सहायता से हमारी आत्मा के लिए शाश्वत आत्मा की ऐसी स्थिति कैसे प्राप्त की जाए, इस पुस्तक में वैज्ञानिक तरीके से समझाया गया है ।

विभिन्न दिव्य गुरुओं और ज्योतिषियों से चर्चा करना मेरे स्वाभाव में सम्मिलित थी । कई गुरुओं से प्राप्त अपने सामूहिक ज्ञान की सहायता से, मैंने अग्नि पूजा (अर्थात्, अग्नि अनुष्ठान) के माध्यम से प्राचीन देवताओं की आराधना करना आरंभ कर दिया । मानव गुरुओं से अधिक, अग्नि पूजा ने मुझे सार्वभौमिक ऊर्जा (जिसे प्रपंच शक्ति या ब्रह्माण्डीय ऊर्जा या ब्रह्म भी कहा जाता है जो मूल रूप से व्यापक परमाणु के कण हैं) की शक्तियों को समझने में मेरा मार्गदर्शन किया । मैंने जो सबक सीखा, वह चौबीस वर्षों तक प्राचीन देवताओं के लिए अग्नि पूजा करने का परिणाम था और इसलिए मैंने देवताओं से गहन दिव्य ज्ञान प्राप्त किया ।

आजकल, हम प्रपंच शक्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए ब्रह्माण्डीय ऊर्जा शब्द का उपयोग करते हैं । मैंने अपने कई छुपे हुए रहस्यों को उजागर करते हुए, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (परमाणु कणों) के आधार पर सभी दिव्य रहस्यों को परस्पर जोड़ा । ऐसे सभी दिव्य रहस्यों की व्याख्या परमाणुओं की विशेषताओं के आधार पर वैज्ञानिक ढंग से की गई है और ये मिथक एवं पुराण कथाओं पर आधारित नहीं है । मैं यह अनुभव कर सका कि ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (जिसे परमाणु या प्रपंच शक्ति या ब्रह्म के रूप में भी जाना जाता है) और मानव आत्माओं की शाश्वत स्थिति के बारे में सरल तथ्य प्राचीन ग्रंथों में जटिल तरीके से लिखे गए थे । मौलिक रूप से, इनमें से अधिकांश ग्रंथ देवताओं (अर्थात्, शाश्वत मानव आत्माओं) और ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों (अर्थात्, परमाणु) के बीच सही ढंग से अंतर नहीं कर पाते थे । मनुष्य, मानव आत्माएं, अमर मानव आत्माएँ, देवात्माएँ, ग्रह आदि सभी क्षुद्र ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों से निर्मित होते हैं । कई संतों ने विभिन्न वस्तुओं और स्वरूपों में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों के व्यापक अस्तित्व को एक सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में गलत समझा ।

कई प्राचीन संतों और ऋषियों ने देवताओं के लिए अग्नि पूजा का अनुष्ठान आग्निकरके अपने मृत्यु-पश्चात जीवन में ईश्वरीय आत्मा की श्रेणी प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की थी । यह अग्नि पूजा मेरे द्वारा पिछले 15 वर्षों से बिना किसी अवरोध के उच्च तीव्रता से एक दिन भी रुके बिना दो स्थायी अर्चकों को नियुक्त करके की जा रही है । आजकल, प्रमुख मंदिरों में भी ऐसे उच्च तीव्रता वाले पूजा अनुष्ठान आयोजित नहीं किए जाते हैं । मेरे अग्नि होम कुंड से छितरी हुई ऊर्जा उच्च-स्तर के विभिन्न देवताओं तक धीरे-धीरे जा पहुंची और उनके साथ मेरे ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का संबंध सुदृढ़ता से स्थापित हो गया । इसलिए, उन्होंने मुझे विशेष रूप से गहन अग्नि पूजा के अनुष्ठानों को संपन्न करते समय विभिन्न ब्रह्माण्डीय कंपनों और दिव्य ध्वनि को सुनने और उनकी अनुभूति करने के लिए कुछ ब्रह्माण्डीय शक्तियों का आशीर्वाद दिया ।

मैं एक उत्तरदायी पारिवारिक व्यक्ति हूँ । मैं अपने जीवन के अभिन्न अंग के रूप में अनुष्ठानों को क्रियाशील करने हुए विभिन्न देवात्माओं की पूजा करता हूँ । मेरा रूप वैसा नहीं है, जैसा कि लोगों ने आध्यात्मिक नेताओं के लिए परिभाषित की है, जैसे कि किसी एक रंग की पोशाक या दाढ़ी आदि के साथ । मैं अत्यधिक प्रगतिशील हूँ, जो अपने घर में कई देवात्माओं को मृत्यु पश्चात एक प्रगतिशील जीवन प्रदान करता हूँ । चूँकि मैं केवल पारंपरिक आस्थाओं और पुरानी कथाओं से बहुत सहजता से आश्वस्त नहीं हो सकता, इसलिए मैंने अग्नि पूजा करते समय देवात्माओं से कई प्रश्न पूछे, और मैंने विभिन्न देवताओं के माध्यम से मानव आत्माओं की अमर स्थिति और ऐसी एक शाश्वत आत्मा की स्थिति प्राप्त करने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त के बारे में जानकारी प्राप्त की ।

प्राचीन देवताओं ने मुझे ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों (परमाणुओं) के आधार पर तार्किक रूप से सोचने और किसी भी चीज़ को आँख बंद करके स्वीकार ना करने के लिए निर्देशित किया क्योंकि इसका उल्लेख प्राचीन आध्यात्मिक ग्रंथों में किया गया था । इस पुस्तक में बताए गए तथ्य व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण हैं। पिछले 3000 वर्षों में, संत ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों और शाश्वत मानव आत्माओं के बीच अंतर करने में विफल रहे और देवताओं की शक्तियों के बारे में भ्रमित रहे । हम ऐसी कहानियाँ पढ़ते हैं जो बताते हैं कि देवतागण मनुष्यों के रूप में जन्म लेते हैं । वास्तव में, मृत्यु के पश्चात एक मानव आत्मा एक शाश्वत मानव आत्मा के रूप में विद्यमान रह सकता है और ऐसी शाश्वत स्थिति को ईश्वर या ईश्वरीय आत्मा या अमरत्व आदि के रूप में जाना जाता है ।

इन मानव आत्माओं ने अपनी मृत्यु पश्चात के जीवन में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के प्रबंध का कौशल सीखा । इस प्रकार, ये शाश्वत आत्माएं अपने ऊर्जा प्रबंध कौशल जिसे दिव्य ऊर्जा कहा जाता है, से उपासकों को आशीर्वाद दे सकते हैं । मनुष्यों ने इस सरल तथ्य को स्वीकार करने के स्थान पर कि सफल मनुष्यों ने अपनी आत्मिक ऊर्जा के रूप में ईश्वरीय स्थिति प्राप्त कर ली है, किसी तरह से ऐसे विचारों को विकसित कर लिया कि देवताओं का जन्म मानव रूप में होता है (जिन्हें अवतार कहा जाता है) । मनुष्यों की मृत्यु के पश्चात, मृत मानव शरीर से मानव आत्मिक ऊर्जा का निर्माण एक स्वचालित प्रक्रिया होती है । किसी शरीर के प्रत्येक कोशिका में संग्रहित ऊर्जा विद्यमान होती है, जिसे उस कोशिका की जीवन ऊर्जा कही जाती है और वे परस्पर एक संबंध का निर्माण करते हैं ।

किसी मानव शरीर की सभी कोशिकाओं से यह अदृश्य ब्रह्माण्डीय ऊर्जा मृत्यु के पश्चात बाहर आती है और मानव आत्मा की ऊर्जा को एक अदृश्य मानव आकृति के रूप में निर्माण करती है । यह मत सोचिए कि मनुष्य के आत्मा की ऊर्जा उसके हृदय केंद्र से निकलने वाला पर्याप्त प्रकाश है ।

मानव के आत्मा की ऊर्जा की कल्पना हृदय से बाहर निकल रही है

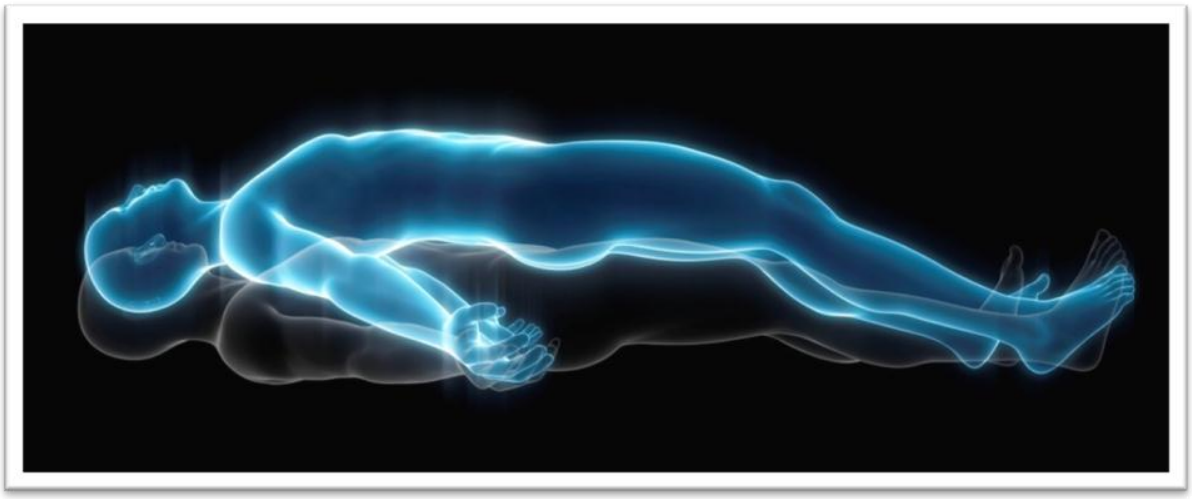

संपूर्ण शरीर से मानव आत्मा का निर्माण

मानव शरीर की सभी कोशिकाओं से यह अदृश्य ब्रह्माण्डीय ऊर्जा मृत्यु के पश्चात बाहर आती है । ऐसी आत्मिक ऊर्जा के निर्माण की शक्ति किसी व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क की शक्ति और विभिन्न ब्रह्माण्डीय कौशलों से सम्बंधित स्मृतियों पर निर्भर करती है । आत्मिक ऊर्जा की आकृति एक जैसी ऊँचाई और अन्य विशेषताओं वाले व्यक्ति के समान ही होगी । आपके आत्मा की ऊर्जा का स्वरुप आपके दर्पण की छवि होगी, परन्तु एक अदृश्य रूप में । मानव शरीर में अरबों ऊर्जा कण हो सकते हैं, इसलिए यह दृश्यमान रूप में होती है । मानव आत्मा में ऊर्जा के लाखों कण हो सकते हैं, लेकिन वह अदृश्य होती है । मानव आत्मा सूक्ष्म जगत में एक नवजात शिशु जैसी होती है और उसकी ऊर्जा का स्तर भंगुर होगा । मानव के जीवन का अस्तित्व उसके भोजन, किसी सुरक्षित स्थान और अन्य मनुष्यों के सहयोग पर निर्भर करता है ।

एक मानव आत्मा का अस्तित्व निवास के लिए सुरक्षित स्थान, अनुष्ठानों के माध्यम से भोजन और अन्य शाश्वत मानव आत्माओं के सहयोग पर निर्भर करता है । भोजन के बिना, मानव आत्मा लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकता और उसकी आत्मिक ऊर्जा धीरे-धीरे हवा में बिखर जाएगी । अधिकांश मानव आत्माएँ 3 से 6 माह के भीतर प्राकृतिक शक्तियों के माध्यम से सम्पूर्ण रूप से हवा में बिखर जाएंगी । कुछ मानव आत्माएं कुछ अन्य शाश्वत मानव आत्माओं के सहयोग और अनुष्ठानों की ऊर्जा की सहायता से आत्मा की अक्षुण्ण ऊर्जा का सामना कर सकती हैं । जब एक मानव आत्मा अपनी ऊर्जा के बिखराव के बिना अस्तित्व में रह सकती है तो इसे निर्वाण, मुक्ति, मोक्ष आदि कहा जाता है, लेकिन इसके विपरीत, कई आध्यात्मिक गुरु आत्मा की ऊर्जा के बिखराव को मोक्ष/मुक्ति आदि के रूप में वर्णित करते हैं ।

मानव आत्मा की ऊर्जा का एक चित्रण जो एक अदृश्य मानव आकृति के रूप में विद्यमान रहता है

निर्दोष मनुष्यों का विश्वास है कि ईश्वर एक है और एक ही ईश्वर ने सम्पूर्ण ब्रह्मांड का निर्माण किया है । उनकी धारणा ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों पर आधारित है जो सभी चीजों का गठन या निर्माण करते हैं । ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण (अर्थात्, परमाणु) पृथक रूप से क्षुद्र होते हैं, लेकिन जब वे एक साथ संगठित होते हैं तो वे विभिन्न वस्तुओं का निर्माण करते हैं जिन्हें हम देखते हैं । ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के कण सभी चीजों में विद्यमान रहते हैं, जैसे कि तारे, ग्रह, मानव, पशु और पृथ्वी पर विद्यमान प्राकृतिक तत्व इत्यादि । इसलिए, पूर्व में संतों और ऋषियों का मानना था कि ब्रह्माण्डीय ऊर्जा अकेला ऐसा महान देवता है जिन्होंने सम्पूर्ण दुनिया और जीवन के सभी रूपों का निर्माण किया है । इस प्रकार से, मानव ने ईश्वर सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है आदि, जैसी अवधारणाएँ विकसित की । व्यापक ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों को यह मान लिया गया कि ईश्वर प्रत्येक स्थान और प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है, आदि ।

कुछ लोग शाश्वत मानव आत्माओं को देवताओं के रूप में पूजा करते थे और ऐसे मानव आत्माओं के मानव जीवन की सफलता, ब्रह्माण्डीय कौशल आदि को पुराण कथाओं के रूप में सुनाया जाता था । ईश्वरीय आत्माएँ अनेक हैं और वे अपनी मानव जीवन की स्मृतियों के साथ अपने आत्मिक स्वरूपों में विद्यमान हैं । ऐसे अमर मानव आत्माओं की पूजा करने के लिए कई दिव्य नामों का उपयोग किया जाता है और वे दिव्य उपाधियाँ उनके ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के प्रबंध कौशल का वर्णन करती हैं । इस पुस्तक में विभिन्न देवात्माओं की विभिन्न दिव्य उपाधियों की व्याख्या की गई है । एक मानव आत्मा अनुष्ठानों और विद्यमान देवात्माओं के माध्यम से शाश्वत आत्मा की श्रेणी प्राप्त कर सकता है । हम विभिन्न देवात्माओं की उपासना करके कई ब्रह्माण्डीय ऊर्जा प्रबंध कौशल सीख सकते हैं ।

कुछ लोग व्यापक परमाणु कणों (अर्थात, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा या सार्वभौमिक ऊर्जा) की पूजा सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में या फिर प्रपंच शक्ति, ब्रह्म आदि के नाम से करते हैं । ऊर्जा का निर्माण ना तो जा सकता है और ना ही इसे नष्ट किया जा सकता है । अत:, इन परमाणु कणों का निर्माण किसी ने नहीं किया और इसलिए ब्रह्मांड में कोई निर्माता नहीं है । ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों (अर्थात् परमाणु कणों) में विभिन्न शक्तियाँ और विशेषताएँ निहित होती हैं । जब हम ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों की पूजा करते हैं, तो वे हमारे वर्तमान कौशल और क्षमताओं को प्रोत्साहित कर सकते हैं । अग्नि पूजा के माध्यम से देवताओं और ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की पूजा करके, मैंने विभिन्न देवताओं और ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की शक्तियों को सीखा । सभी देवताओं में एक जैसी क्षमताएँ नहीं होतीं । हालाँकि विभिन्न देवताओं की पूजा विभिन्न नामों एवं विभिन्न मंदिरों में की जाती है, लेकिन मनुष्यों ने यह मान्यताएँ विकसित कर ली है कि सभी देवता एक जैसे होते हैं ।

लेकिन ब्रह्मांड में, विशेष रूप से पृथ्वी पर, **मात्र एक ईश्वर नहीं** है और देवता सदैव देवताओं के एक समूह के रूप में कार्य करते हैं जिन्हें दिव्य परिवार या दिव्य अनुचर के रूप में जाना जाता है । जिस तरह से, किसी कंपनी के प्रशासन में एक सीईओ, उपाध्यक्ष, महाप्रबंधक, प्रबंधक, अन्य तकनीशियन आदि होते हैं, उसी तरह से एक प्रमुख मंदिर में देवताओं के पास एक दिव्य अनुचर होता है जो उच्च स्तर के देवताओं, तृतीयक स्तर के देवताओं, ग्राम देवताओं और सुरक्षात्मक देवताओं का गठन करते हैं जो अपने मंदिर के क्षेत्र में रहने वाले भक्तों को आशीर्वाद देते हैं ।

किसी प्रमुख मंदिर में देवताओं का एक समूह एक दिव्य परिवार के रूप में निवास करता है । किसी मंदिर में देवताओं की संख्या मंदिर के आकार और वहाँ पर उपलब्ध गर्भ-गृह की सुविधाओं पर निर्भर करता है । विभिन्न देवताओं की आशीर्वाद देने की शक्तियाँ उनकी ब्रह्माण्डीय ऊर्जा प्रबंध की शक्तियों और भक्तों द्वारा उनके मंदिरों में किए जाने वाले अनुष्ठानों की शक्ति पर आधारित होती हैं । विभिन्न देवताओं और उनकी ब्रह्माण्डीय शक्तियों को समझने के दौरान, मैंने सीखा कि कैसे प्रत्येक देवता दूसरों से भिन्न होते हैं और कैसे उनकी दिव्य शक्तियाँ मंत्रों के रूप में ज्ञात ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कंपनों के आधार पर काम करती हैं ।

विभिन्न देवात्माओं के शाश्वत जीवन का अस्तित्व कुछ सौ वर्षों से लेकर हजारों वर्षों तक होता है। उनकी दिव्य स्थिति उनके शाश्वत अस्तित्व की अवधि, उनकी ब्रह्माण्डीय ऊर्जा-प्रबंध की व्यक्तिगत शक्तियों, दिव्य अनुचर आदि पर आधारित होती है । ऐसी ईश्वरीय आत्माएं कई मंदिरों में निवास करती हैं, फिर भी उनकी संख्या कम होती है । शाश्वत मानव आत्माओं (देवात्माओं) को छोड़कर, कई मानव आत्माएँ विभिन्न स्थानों, जैसे कब्रिस्तानों, जंगलों, पर्वतों आदि में विचरण करती रहती हैं । ऐसे अस्थायी और विकृत मानव आत्माओं को भूतों के रूप में जाना जाता है ।

मनुष्यों को अच्छे, बुरे, धूर्त, दुर्बल, बलवान, गुंडे, उपद्रवी, हत्यारे आदि के रूप में वर्गीकृत किया गया है । इसी प्रकार से, मानव आत्माओं की विभिन्न स्थितियों को उनके अच्छे और बुरे चरित्रों के आधार पर देवता, बुरी शाश्वत मानव आत्मा (दुष्ट देवता), दुष्ट शक्तियाँ, भूत, बुरी आत्माएं आदि नाम दिया गया है । मानव आत्माओं के निवास स्थल मानव आत्माओं की मृत्युपरांत स्थिति को तय करते हैं । मन्दिरों में निवास करने वाली शाश्वत मानव आत्माएँ देवता कहलाती हैं । ऐसे देवात्माओं के अतिरिक्त, कई मानव आत्माएँ हमारे आसपास मंडराती रहती हैं जिनके पास रहने के लिए कोई स्थान नहीं होता । ऐसी आत्माएँ आमतौर पर कब्रिस्तानों, सड़कों, जीर्ण-शीर्ण भवनों आदि में निवास कर सकती हैं ।

दुष्ट शक्तियाँ मृत पशुओं से छितरे हुए ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण (परमाणु) होते हैं और हमारे वातावरण में विचरण करती हैं । बुरी शक्तियाँ किसी व्यक्ति का अनिष्ट करने के लिए तांत्रिकों द्वारा छोड़े गए ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के कण होते हैं । दुष्ट आत्माएँ बुरी मानव आत्माएँ या दुष्ट देवता होते हैं । यदि किसी अच्छे चरित्र वाले मानव को मोक्ष प्राप्त होता है, तो ऐसे अच्छे मानव की आत्मा को एक मंदिर में एक वरिष्ठ देवात्मा के अधीन स्थान प्राप्त होता है और ऐसी स्थिति को पारिवारिक भगवान के रूप में जाना जाता है । यदि कोई बुरी मानव आत्मा अपने प्रयासों के द्वारा लंबे समय तक अपने अस्तित्व को बचाकर रख सकता है, तो ऐसे किसी शाश्वत मानव आत्मा को मानवता द्वारा सम्मान नहीं दिया जाता है या उसकी पूजा नहीं की जाती है और इसलिए उनके पास अपनी मृत्यु के पश्चात स्थायी रूप से रहने के लिए कोई स्थान उपलब्ध नहीं होता । ऐसा निराश मानव आत्मा उद्वेलित हो जाता है और वह दुष्ट देवता (दुष्ट देवता/ दुष्ट आत्मा) बन जाता है ।

किसी मानव आत्मा के शीर्ष भाग के साथ ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के कणों का सम्बन्ध

अपनी क्रमिक ऊर्जा क्षति/ छितराव के कारण एक निर्बल मानव आत्मा

मानव आत्मा के ऊर्जा स्वरूप और इसके ऊर्जा कणों में अंतर होता है । मानव आत्मा में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के कण अपने ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से जुड़ाव के कारण परस्पर चिपकने का प्रयास करते हैं । ऊर्जा का यह जुड़ाव उनके मानव जीवनकाल के दौरान उनके बीच स्थापित हो जाता है, लेकिन तेज हवा जैसी प्राकृतिक शक्तियों के कारण, आत्मिक ऊर्जा के कणों के बीच ऊर्जा के इस जुड़ाव की शक्ति प्रभावित होती है । इस प्रकार, मानव आत्माएँ धीरे-धीरे व्यक्तिगत ऊर्जा कणों में बिखर सकती हैं । ऐसे छितरे हुए ऊर्जा के कण हवा या ब्रह्मांड में विलीन हो जाएंगे, इसे मृत्युपरांत मानव आत्मा की मृत्यु के रूप में उल्लेखित किया गया है । मृत शरीर से ऐसे छितरे हुए ऊर्जा के कण या तो जीवन के किसी भी स्वरूप में नया जन्म ले सकते हैं या फिर निष्क्रिय पदार्थों में समाहित हो सकते हैं । कई संतों ने ब्रह्मांड और उसके ऊर्जा कणों को सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में माना । उन्होंने खुले ब्रह्मांड में किसी मानव आत्मा से ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों के बिखराव की कल्पना की क्योंकि मानव आत्मा का परमेश्वर या मोक्ष में विलय हो जाता है ।

मानव आत्मा से बिखरे हुए ऊर्जा के कण धीरे-धीरे हवा या ब्रह्मांड में विलीन हो जाते हैं

मुक्ति का अर्थ है, मानव जीवन की स्मृतियों के साथ एक अक्षुण्ण मानव आत्मा के रूप में सदैव विद्यमान रहना और ना कि बिखरकर हवा में विलीन हो जाना । जब मानव आत्मा की ऊर्जा धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है, तो वह विकृत मानव आकृति का रूप ले लेती है और उसे भूत के रूप में जाना जाता है, परन्तु मानव आत्मा से छितरे हुए ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के कण कभी नहीं मृत नहीं होते और वे व्यक्तिगत ऊर्जा कणों के रूप में अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं । वे किसी मानव विशेष की स्मृति को वहन करते हैं और उनमें से कुछ पृथ्वी पर जीवन के विभिन्न रूपों, जैसे कि घास, केंचवे, वृक्ष, आदि के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं और उनमें से कुछ हवा में ऊर्जा कणों के रूप में चारों ओर केवल विचरण कर रहे हैं ।

पूर्व के संतों द्वारा ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को प्रपंच शक्ति या ब्रह्म के रूप में जाना जाता था । ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के बारे में ज्ञान को ब्रह्म ज्ञान कहा जाता है । इस पुस्तक में, मैंने मानवता के लिए ब्रह्म ज्ञान की मूलभूत अवधारणाओं को लिखा है, ताकि उन्हें शाश्वत मानव आत्माओं और ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के उन रहस्यों के बारे में प्रबुद्ध किया जा सके जिन्हें पिछले 3000 वर्षों में किसी के भी द्वारा इतने विस्तार से समझाया नहीं गया था । इस पुस्तक से उजागर होगा कि देवता (शाश्वत मानव आत्माएं) और ब्रह्माण्डीय ऊर्जा ब्रह्मांड में, विशेष रूप से पृथ्वी में कैसे काम करते हैं और उन्हें स्वतंत्र रूप से समझने के लिए कैसे मानवता का उल्लंघन किया जाता है ।

इस पुस्तक में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों की विशेषताओं और कौशलों की व्याख्या की गयी है । हमारे वातावरण में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों के प्रभाव को कई उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया गया है, जैसे कि हमारे वातावरण में रखे गए चित्र, प्रतिमाएँ, मूर्तियाँ और हमारे शरीर पर गुदे हुए टैटू इत्यादि । हमारे मस्तिष्क में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के प्रतिबिंब और ऊर्जा के संचार के बारे में विस्तृत रूप से समझाया गया है । इस पुस्तक को पढ़ते समय, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा और शाश्वत मानव आत्माओं के पीछे के तर्क को स्वतंत्र रूप से समझने के लिए अपने मस्तिष्क को खुला रखें । ब्रह्मांड, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा और देवता हर किसी की सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं ।

कई प्राचीन देवताओं ने मृत्यु के पश्चात क्या होता है, मानव मस्तिष्क और उसकी स्मृति की शक्तियों द्वारा आत्मिक ऊर्जा के निर्माण आदि के बारे में मेरा ज्ञानवर्धन किया है । मानव आत्माओं की विभिन्न अवस्थाओं और देवात्माओं की सहायता के बिना ऐसी मानव आत्माओं के अस्तित्व के बारे में बताया गया है । ये उत्तर किसी भी आध्यात्मिक लेखों के माध्यम से मानवता को आज तक ज्ञात नहीं हुए थे । यह परम ज्ञान है और प्रत्येक मनुष्य जो अपनी आत्मिक ऊर्जा रूप में शाश्वत जीवन की इच्छा रखता है, को इन ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के रहस्यों को अवश्य जानना चाहिए । विश्व भर में विभिन्न मृत्यु अनुष्ठानों (दफ़नाने और दाह संस्कार) का पालन किया जा रहा है । सामाजिक सेवाओं के नाम पर शवों से आँख, जैसे महत्त्वपूर्ण अंगों को निकाल लिया जाता है । किसी मृत मानव के शरीर से अंग निकालने या दाह-संस्कार से होने वाली क्षति और तदनुरूप ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की क्षति मानव आत्मा के ऊर्जा के निर्माण को प्रभावित करती है ।

ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के यह रहस्य उन मनुष्यों के लिए उत्कृष्ट जानकारी होगी जो मोक्ष और शाश्वत जीवन प्राप्त करने का लक्ष्य रखते हैं । पूर्व में, राजाओं और महान आध्यात्मिक गुरुओं के शवों को उचित प्रकार से ममी में रूपांतरित किया जाता था या सुरक्षित रूप से दफनाया जाता था, जिसे समाधि के रूप में जाना गया । दफ़नाने की इन सुरक्षित पद्धतियों ने उन्हें अपनी आत्मिक ऊर्जा को प्रभावी ढंग से उत्पन्न करने में उनकी सहायता की । समय के साथ, अनुष्ठान संपन्न किए गए, उन मानव आत्माओं को ऊर्जावान बनाने के लिए भोजन प्रस्तुत किया गया और ऐसे समाधि स्थलों को पूजा स्थलों में परिवर्तित कर दिया गया ।

मानव शरीर की कोशिकाओं के बीच ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का जुड़ाव मृत्युपरांत मानव आत्मा की ऊर्जा के निर्माण में सहायता करता है । ऐसी आत्मिक ऊर्जा के निर्माण की शक्ति मानव विशेष के मस्तिष्क कोशिकाओं की विभिन्न स्मरण शक्तियों, मानव जीवन में सीखी गई विभिन्न पद्धतियों, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की क्षमताओं और मानव आत्माओं के शाश्वत जीवन के बारे में प्राप्त ज्ञान, अन्य पूजा पद्धतियों आदि पर निर्भर करती है, जो उनकी आत्मिक ऊर्जा को अक्षुण्ण और शाश्वत बनाए रखने में सहायता करती है । अन्यथा, ऐसी जानकारी के बिना एक सामान्य मानव के लिए, उनकी आत्मिक ऊर्जा व्यक्तिगत ऊर्जा कणों में बिखर जाएगी और वे परमाणु कण निचले स्तर के विभिन्न जीवन स्वरूपों या निष्क्रिय पदार्थों में परिवर्तित हो जाएँगे ।

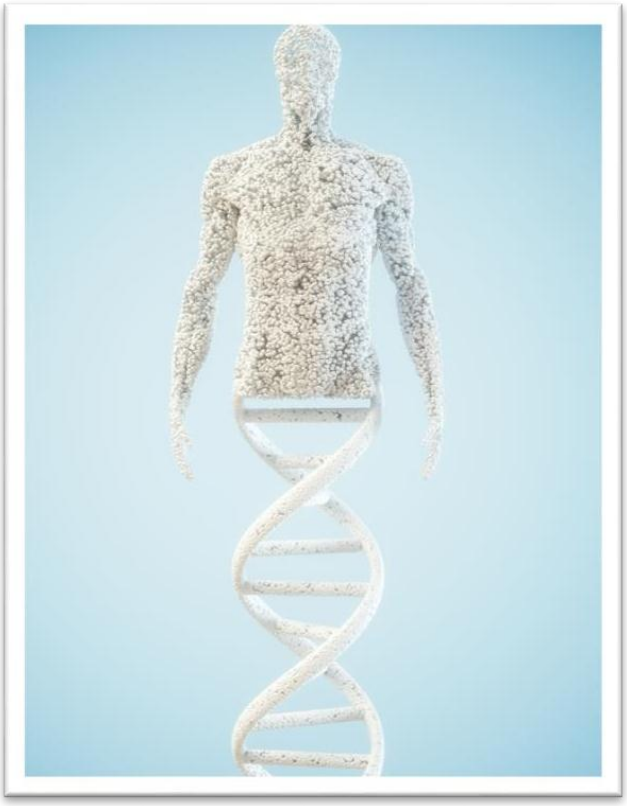

सम्पूर्ण शरीर के साथ ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का सम्बन्ध

किसी मानव शरीर के कोशिकाओं के साथ ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (परमाणु) का सम्बन्ध

उपासकों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है । मनुष्यों की पहली श्रेणी शाश्वत मानव आत्माओं को देवताओं के रूप में पूजती है । इन देवताओं की पूजा प्रचलित दिव्य नामों से की जाती है । इन प्रचलित दिव्य नामों के कारण, लोगों को विश्वास है कि एक ही ईश्वर हर जगह विद्यमान रहता है । उपासक आम तौर पर आस-पास स्थित मंदिरों में रहने वाले देवताओं के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं । मंदिर के आकार के आधार पर, किसी मंदिर में कम से कम दो से लेकर अधिकतम दस तक देवात्माएँ निवास कर सकती हैं । मुख्य देवात्मा मूलस्थानम में निवास करता है और अन्य देवात्माओं को उसी मंदिर के छोटे गर्भ-गृह में रहने वाले उनके परिवार के देवताओं के रूप में उल्लेखित किया जाता है । जो देवता किसी भक्त की आत्मा को मोक्ष प्रदान करते हैं, वे उस भक्त की आत्मा को उस मंदिर के आकार और अन्य सुविधाओं के अंतर्गत, अपने मंदिर में निवास करने की अनुमति देते हैं ।

मनुष्यों की दूसरी श्रेणी व्यापक ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों (परमाणुओं) की सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में पूजा करती है । परमाणुओं को प्रपंच शक्ति, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा, ब्रह्म आदि भी कहा जाता है । वे ब्रह्मांड में हर स्थान पर विद्यमान हैं । ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण सभी दृश्य और अदृश्य पदार्थों का निर्माण करते हैं, और वे कई क्रियाएँ कर सकते हैं । मनुष्यों और पशुओं आदि के कार्य और कौशल विभिन्न स्वरूपों में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों के सभी कार्य होते हैं । व्यक्तिगत रूप से ये क्षुद्र ऊर्जा कण कम क्रियाओं का प्रदर्शन कर सकते हैं, लेकिन, वे बड़ी आकृतियों या जीवन स्वरूपों में एकत्रित होने पर अधिक कार्य कर सकते हैं । ब्रह्माण्ड में सभी गतिविधियों को प्रदर्शित करने वाले इन क्षुद्र ऊर्जा कणों द्वारा सभी प्रकार के स्वरूपों का निर्माण किया जाता है । चूंकि ये क्षुद्र ऊर्जा कण कुछ भी और सब कुछ कर सकते हैं, इसलिए कई आध्यात्मिक गुरुओं को विश्वास था कि ये ऊर्जा कण (अर्थात्, परमाणु कण) एक सर्वशक्तिमान भगवान थे और वे सर्वशक्तिमान भगवान के रूप में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों के व्यापक अस्तित्व की पूजा करते थे ।

ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण ब्रह्मांड में हर जगह विभिन्न दृश्य रूपों, जैसे तारे, ग्रह, पृथ्वी, आदि में विद्यमान हैं। विकिरण, कंपन आदि ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के अदृश्य रूप हैं । कुछ संतों ने हमारे सौर परिवार को महत्त्व प्रदान किया और ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों को श्रेणीबद्ध किया, जैसे सूर्य (सूर्य देव) से ऊर्जा विकिरण, चंद्रमा (चंद्र देव) से ऊर्जा विकिरण, मंगल (अंगारा देव) से ऊर्जा, बुध (बुध देव) से ऊर्जा, शुक्र (शुक्र देव) से ऊर्जा और बृहस्पति (बृहस्पति देव) से ऊर्जा विकिरण, शनि (शनि देव) से ऊर्जा, पृथ्वी पर उपलब्ध विभिन्न तत्वों की ऊर्जा (पंच भूत या पांच महान तत्व) और उनकी पूजा की । कुछ लोग पृथ्वी की ऊर्जा के पाँच तत्वों (भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश) की पूजा ना, मा, सी, वा, या के रूप में करते हैं ।

हम ऑक्सीजन (O_2) को श्वास में भरते हैं जो एक ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण है । प्रत्येक ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण में जीवन है । हमारे वातावरण में मुक्त रूप से विचरण करने वाले ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं और अपनी पूर्व की स्मृति के अनुसार विशिष्ट विशेषताओं को प्रेरित करते हैं । विभिन्न रंगों, कंपनों, मूर्तियों और कलाचित्रों के माध्यम से ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण हमारे दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं, इसकी व्याख्या की गई है ।

ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की लंबे समय तक पूजा करने से मनुष्य को ब्रह्मांड से प्रत्यक्ष रूप से मुक्त विचरण करने वाले ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों को अवशोषित करने में सहायता मिल सकती है । इसलिए, एक मानव आत्मा ब्रह्मांड से ऊर्जा प्राप्त कर सकता है और मृत्यु के पश्चात् थोड़ी अधिक अवधि के लिए एक अक्षुण्ण आत्मा का सामना कर सकता है, परन्तु ऐसे ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के उपासकों को उनके मृत्युपरांत जीवन में किसी शाश्वत देवात्माओं का सहयोग नहीं मिलता ।

मनुष्यों की तीसरी श्रेणी कुछ आध्यात्मिक गुरुओं या संतों या संतसुलभ आत्माओं को अपने देवताओं की तरह पूजा करती है और कई स्थानों पर उनके लिए मंदिर का निर्माण भी करवाती है । ब्रह्माण्डीय ऊर्जा में परावर्तन की शक्ति होती है । जब हम किसी मानव आत्मा की पूजा करते हैं, चाहे वे शाश्वत आत्मा के रूप में विद्यमान हों या नहीं, उनकी मूर्तियों के आसपास के ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कण उपासकों को ऐसी आत्माओं के मानव जीवन की विशेषताओं को प्रतिबिंबित कर सकते हैं । यदि ऐसे आध्यात्मिक गुरु के मानव जीवन में प्रेम और दया के गुण हैं, और जब उपासक उस आत्मा से प्रार्थना करते हैं, तो ऐसे पूजा स्थल में या उस मूर्ति/कलाचित्र के आसपास स्थित ब्रह्माण्डीय ऊर्जा उपासक के मस्तिष्क कक्षों में उसी प्रकार के प्रेम और दया भाव उत्पन्न कर सकते हैं । जब कोई मनुष्य अपने मानव जीवन में साहसी होता है और जब उसकी आत्मा की पूजा की जाती है, तो उसकी मूर्ति के चारों ओर स्थित ब्रह्माण्डीय ऊर्जा उपासकों में ऐसे साहसी पहलुओं को प्रेरित कर सकती है । ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का यह आशीर्वाद परावर्तन की अपनी विशेषताओं के कारण है ।

प्राचीन देवताओं के रूप में ज्ञात शाश्वत मानव आत्माओं की पहली श्रेणी विभिन्न ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के रहस्यों, जैसे कि मंत्रों, अष्टम सिद्धियों आदि से भलीभाँति परिचित है । तीसरी श्रेणी में, मानव आत्माएं अमर आत्माओं के रूप में विद्यमान हो भी सकती हैं और नहीं भी और उन्हें पवित्र आत्माओं के रूप में जाना जाता है । पिछली कुछ शताब्दियों में मनुष्यों ने कृतज्ञता दिखाने के लिए कई आध्यात्मिक नेताओं की आत्माओं को ईश्वर के रूप में निर्मित किया है । जिन संतों ने अपने जीवन में अनुष्ठान और मंत्रों का आयोजन नहीं किया, वे सामान्य तौर पर ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के रहस्यों को नहीं जानते । इसलिए, उनकी आत्माएं भी ऊर्जा के प्रबंध कौशल के बारे में अधिक नहीं जानतीं । कुछ संतसुलभ आत्माओं की पूजा उनके मानवीय गुणों के कारण की जाती है, जो उपासकों के बीच एकता का निर्माण करती है । यह एक आधुनिक और वैज्ञानिक दुनिया है । सभी समझदार मनुष्य विज्ञान पर आधारित स्पष्टीकरण की अपेक्षा रखते हैं । इसलिए, कुशल ब्रह्माण्डीय देवताओं से वास्तविक आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की विशेषताओं, शक्तियों, प्रतिबिंबों और कंपनों को पर्याप्त रूप से समझा जाना चाहिए । जब आप ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, तो आपकी आत्मा सरलता से मोक्ष की प्राप्ति कर सकती है ।

मोक्ष शब्द की कल्पना एक महान शब्द के रूप में ना करें । कोई भी सामान्य व्यक्ति जो अग्नि पूजा या मंदिर का निर्माण करके कुछ देवताओं (शाश्वत आत्माओं) को क्रियाशील करता है, आसानी से मोक्ष प्राप्त कर सकता है और यह केवल संतों और आध्यात्मिक नेताओं के लिए नहीं है । आप किसी देवी-देवता की पूजा किए बिना भी अपना जीवन जीने को प्राथमिकता दे सकते हैं । आप अपने कौशल, ज्ञान और रिश्तेदारों के सहयोग पर निर्भर रह सकते हैं । अगर आपका मन सुदृढ़ है तो आप कठिन समय में भी स्वयं को सांत्वना दे सकते हैं । आप जीवन में लाखों की कमाई कर सकते हैं ।

आप एक दिन शांति से मर सकते हैं और अपने शरीर के ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों को प्राकृतिक जीवन चक्र से गुजरने दे सकते हैं जैसे कि निम्न स्तरीय जीवन रूपों में पुनर्जन्म या निष्क्रिय मामलों में भाग लेना आदि । यदि आप ऐसे सामान्य जीवन चक्र को प्राथमिकता देते हैं, तो आपको किसी भी भगवान की पूजा में अपना समय व्यतीत करने की कोई आवश्यकता नहीं है । आपको मोक्ष, स्वर्ग आदि जैसे, किसी भी मृत्युपरांत जीवन के बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है ।

परन्तु, यदि आप मृत्युपरांत जीवन के बारे में सोचते हैं, तो आपको कुछ देवात्माओं की पूजा करने की आवश्यकता होगी और आप उनसे अपनी आत्मा के लिए शाश्वत जीवन की अपेक्षा रख सकते हैं । इस पुस्तक में ब्रह्मांड में **नरक और स्वर्ग** जैसी अवधारणाओं में लोगों की आस्थाओं को उचित रूप से स्पष्ट किया गया है । जैसा कि अधिकांश लोगों को विश्वास है कि आपकी आत्मा को मृत्युपरांत आपके जीवन में समायोजित करने के लिए पृथ्वी के ऊपर स्थित आकाश में कोई स्वर्ग या नरक नहीं है । स्वर्ग और नर्क मानव आत्मा की मृत्यु के बाद की स्थिति है, जहाँ वह निवास करता है और अपने आत्मा की ऊर्जा को सुदृढ़ करने के लिए उसे अतिरिक्त भोजन की ऊर्जा कैसे मिलती है । यदि आपको देवात्माओं का सहयोग मिलता है तो आपकी आत्मा उनके मंदिरों में रहकर अनुष्ठानों से भोजन की ऊर्जा प्राप्त कर सकती है । धीरे-धीरे, आपकी आत्मा मंदिरों में देवात्माओं के मार्गदर्शन में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के प्रबंध कौशल में सुधार कर सकती है और उनके अंतर्गत, एक पारिवारिक देवता की स्थिति प्राप्त कर सकती है । इस प्रकार से, उचित समय पर आपकी आत्मा की भी पूजा की जाएगी जिसे मृत्युपरांत जीवन में स्वर्ग की स्थिति में रहने के रूप में उल्लेखित किया गया है ।

यदि आपके पास घर नहीं है तो आप किराए के घर में रह सकते हैं, लेकिन यदि मृत्युपरांत आपकी आत्मा के पास रहने के लिए कोई स्थान (अर्थात मंदिर) नहीं है तो आपकी आत्मा केवल सड़कों और कब्रिस्तानों में ही रह सकती है । यह मृत्युपरांत जीवन में नरक में रहने जैसा है और आपके आत्मा की ऊर्जा तीव्र गति से हवा में ऊर्जा के लाखों व्यक्तिगत कणों में बिखर जाती है या पृथ्वी पर गिर जाती है । इस प्रकार से, आपकी आत्मा के सभी ऊर्जा कण निचले स्तर के विभिन्न जीवन स्वरूपों, जैसे कि घास, कीट आदि या पत्थर, मिट्टी आदि के रूप में अपना पुनर्जन्म आरंभ कर देते हैं । आपकी आत्मा के लिए ऐसी स्थिति को नरक जैसी स्थिति कहा जाता है । हम जानते हैं कि वे निर्धन लोग जो बिना किसी आश्रय के सड़कों पर रहते हैं, निराश, दुर्बल और अस्वस्थ होते हैं । ठीक इसी प्रकार से, मानव आत्माएं जो दुर्बल, निराश हैं और जिनके पास किसी भी पूजा स्थल में रहने के लिए स्थान नहीं है, वे कब्रिस्तानों में घूमते रहते हैं और उनके आत्मा की ऊर्जा विकृत आकार में दिखाई देगी । ऐसे कुंठित एवं विकृत मानव आत्माओं को भूत-प्रेत कहा जाता है ।

यदि उत्तेजित मन वाले निर्धन लोग सुदृढ़ हैं, तो वे अन्यों के लिए समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं । ठीक इसी प्रकार से, सुदृढ़ मानव आत्माएं जिनके पास मंदिरों में रहने के लिए कोई स्थान नहीं है, वे दुष्ट शक्तियाँ और दुष्ट देवताएँ बन जाएंगी । प्रत्येक मनुष्य दृश्यमान मानव शरीर में संचित ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की एक पोटली होती है । प्रत्येक देवता (अर्थात शाश्वत मानव आत्मा) भी ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की एक पोटली होती है जिसे आत्मिक ऊर्जा के रूप में जाना जाता है । वे अदृश्य ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के कण अपने नश्वर जीवन में स्थापित ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के साथ सम्बन्ध के कारण अदृश्य मानव आकृति में एक साथ रहते हैं ।

जब ऐसी आत्मिक ऊर्जा अक्षुण्ण रहती है तो हम उसे अमर कहते हैं । वहीं, सामान्य मानव आत्मा के ऊर्जा कण अक्षुण्ण नहीं रह पाते और बिखर जाते हैं । इसका दिव्य रहस्य यह है कि कैसे एक मानव आत्मा एक शाश्वत आत्मा के रूप में विद्यमान रह सकता है ।

इस पुस्तक में मैंने उन मृत्युपरांत रहस्यों का वर्णन किया है । इस प्रकार से, कोई आपकी आत्मा के शाश्वत जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकता है । आइए, हम उन अंधविश्वासों कि सामाजिक सेवाएँ करने से व्यक्ति को सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ स्वर्ग में स्थान मिल सकता है, को नकार दें । कृपया यह कल्पना ना करें कि आपकी आत्मिक ऊर्जा को अपने आप ही दूसरा मानव जन्म मिल जाएगा । मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म पाने के लिए किसी धर्मात्मा के सहयोग की आवश्यकता होती है, अन्यथा मनुष्य की आत्मा हवा में बिखर जाती है ।

मंदिर या पूजा स्थल शाश्वत मानव आत्माओं के निवास स्थान (घर) हैं । यदि कोई भी शाश्वत मानव आत्माएँ नहीं हैं, तो मुक्त विचरण करने वाले ऊर्जा कणों की परावर्तक क्रिया उपासकों को आशीर्वाद देती है । यदि इन अमर मानव आत्माओं में मुक्त विचरण करने वाले ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कणों को व्यवस्थित करने का कौशल है, तो ऐसी कुशल आत्माएं उपासकों को आशीर्वाद दे सकती हैं और वे भगवान कहलाती हैं । ऐसे शाश्वत देवात्माओं की पूजा विभिन्न दिव्य नामों से की जाती है और वे मंदिरों में देवताओं के एक समूह (दिव्य परिवार) के रूप में रहते हैं । जीवन में, आपको कुछ योग्यताओं की आवश्यकता होती है जो आपके कौशल या ज्ञान को दर्शाती है । मृत्यु के पश्चात, आपकी आत्मा को एक दिव्य नाम की आवश्यकता होती है जो आपके ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के प्रबंध कौशल से आता है । आपकी आत्मा उसी दिव्य नाम वाले योग्य, कुशल, देवात्मा की आराधना करके इस दिव्य नाम को प्राप्त कर सकती है ।

प्रत्येक मंदिर की सुरक्षा कुछ सुदृढ़ मानव आत्माओं द्वारा की जाती है जिन्हें सुरक्षात्मक देवता कहा जाता है । उनका मुख्य कर्तव्य किसी भी अशुभ आत्माओं, दुष्ट देवताओं, भूत, नई रचित मानव आत्माओं आदि के प्रवेश को उनके मंदिरों में रोकना होता है । मंदिर के आकार के आधार पर, दो से पांच सुरक्षात्मक देवता वहाँ पर विद्यमान होंगे । यदि कोई मंदिर आकार में बड़ा है, तो एक मूलस्थानम देवता, कुछ पारिवारिक देवता और कुछ सुरक्षात्मक देवता एक दिव्य अनुचर की स्थापना करते हैं और भक्तों को आशीर्वाद देते हैं । छोटे मंदिरों में एक या दो शाश्वत मानव आत्माएँ निवास करती हैं, जो अधिकतर सुरक्षात्मक देवता या ग्राम देवता होते हैं ।

जीवन में, मनुष्य एक आरामदायक जीवन जीने के लिए आवश्यक धन व्यय करके दूसरे मनुष्यों से सहायता प्राप्त करता है । इसका अर्थ है कि किसी मानव शरीर की ब्रह्माण्डीय ऊर्जा दूसरे मानव शरीर की ऊर्जा से उपयोग स्वीकार करती है । ठीक इसी प्रकार से, मनुष्य की आत्मिक ऊर्जा आरामदायक जीवन के लिए किसी अन्य शाश्वत आत्मा (ईश्वर) से सहायता प्राप्त कर सकती है । हमें यह जानना चाहिए कि हम अपनी ब्रह्माण्डीय ऊर्जा किसे प्रदान करते हैं और केवल उन्हीं से हम आशीर्वाद की आशा कर सकते हैं । विभिन्न देवताओं को अनुष्ठानों के माध्यम से इस तरह के ऊर्जा के हस्तांतरण के बिना, केवल यह विश्वास करना कि मात्र मुक्त विचरण करने वाली ब्रह्माण्डीय ऊर्जा ही सर्वशक्तिमान महान देवता है और ऐसे देवता ने मनुष्यों को उनकी मृत्यु पश्चात जीवन में समायोजित करने के लिए बड़े स्वर्ग का निर्माण करवाया है, मात्र एक मूर्खतापूर्ण दृष्टिकोण है ।

निर्धन मनुष्य अपने जीवन की आवश्यकताओं और मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक धन और ज्ञान के लिए देवताओं से आशीर्वाद की अपेक्षा रखते हैं, परन्तु समृद्ध और देवत्व के बारे में जानकारी रखने वाले लोग अपने धन का उपयोग अधिक दैवीय सेवाओं के प्रदर्शन, जैसे कि मंदिरों का निर्माण और अग्नि पूजा आदि में योगदान करने के लिए कर सकते हैं। धन भी ब्रह्माण्डीय ऊर्जा है जिसे देवताओं, मंदिरों और अग्नि पूजा के माध्यम से दिव्य ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है । इसलिए, व्यक्ति मृत्युपरांत जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक देवताओं की ऊर्जा का समर्थन प्राप्त कर सकता है । पूर्व के राजाओं, धनिकों और ऋषियों ने भी यही किया था ।

वर्तमान संसार में बहुत से धनी व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करने और अपना धन मंदिरों और पूजा स्थलों पर खर्च करने में रुचि रखते हैं, परन्तु उनको ब्रह्माण्डीय ऊर्जा की अवधारणाओं को समझाने के लिए कोई उचित मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है । यदि उन्हें उचित ढंग से प्रबुद्ध किया जाए तो वे निश्चित रूप से ब्रह्माण्डीय ऊर्जा और कुशल ब्रह्माण्डीय देवताओं से लाभान्वित होंगे । आपका धन मोक्ष प्राप्त करने में आपकी सहायता करेगा । इस पुस्तक में यह बताया गया है कि अपने धन और पहले से विद्यमान दिव्य आत्माओं के माध्यम से एक धर्मात्मा कैसे बना जाए । हम अपने माता-पिता का चुनाव नहीं कर सकते, परन्तु हम कुशल ब्रह्माण्डीय देवताओं की विभिन्न श्रेणियों को चुन सकते हैं और उनके माध्यम से, हम एक जैसी ईश्वरीय स्थिति प्राप्त कर सकते हैं । यदि आप कुशल ब्रह्माण्डीय देवताओं के लिए मंदिरों का निर्माण करते हैं, तो आप पूर्व के संतों के तप आदि, जैसी बाधाओं के बिना मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं और सदैव के लिए अपनी आत्मिक ऊर्जा के स्वरूप में विद्यमान रह सकते हैं ।

मैं कामना करता हूँ कि आप मोक्ष प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करें और अपने मृत्युपरांत जीवन में अपनी आत्मा के लिए एक दैवीय स्थिति प्राप्त करें!